(044-321) WK 07

13 MONDAY • FEBRUARY

नातेदारी की रीतियाँ
Kinship usages

नातेदारी व्यवस्था के अन्तर्गत रक्त अथवा विवाह से सम्बन्धित व्यक्तियों से हमारा एक विशेष सम्बन्ध ही नहीं होता बल्कि विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने के लिए कुछ विशेष व्यवहारों अथवा रीतियों को भी महत्व दिया जाता है। वास्तव में हम विभिन्न नातेदारों से जो सम्बन्ध स्थापित करते हैं उनमें कुछ का आधार श्रद्धा और सम्मान होता है तो अनेक व्यवहारों का आधार स्नेह, प्रेम और परिहास होता है। इनके अतिरिक्त नातेदारी व्यवहारों को नियन्त्रित करने के लिए अनेक ऐसी रीतियाँ भी विकसित हो जाती हैं जिनके द्वारा कुछ व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है अथवा कुछ व्यक्तियों को एक-दूसरे से पृथक् रखा जाता है। उदाहरण के लिए, बच्चों का अपने माता-पिता से स्थापित होने वाला सम्बन्ध श्रद्धा और सम्मान का सम्बन्ध होता है जबकि जीजा-साली अथवा देवर-भाभी के बीच सभ्यता और परिहास के सम्बन्ध पाये जाते हैं। अनेक रीतियाँ दामाद और श्वसुर के बीच दूरी बनाए रखने का प्रयत्न करती हैं जबकि कुछ रीतियों के द्वारा मामा और भान्जे के बीच घनिष्ठता उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। व्यवहार के इन सभी ढंगों को हम नातेदारी की रीतियाँ कहते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख रीतियों को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है:—

⇒ परिहार (Avoidance) →

परिहार अथवा विमुखता एक विशेष रीति है जिसके द्वारा कुछ विशेष नातेदारों को एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने से रोका जाता है। परिहार सम्बन्धी रीतियाँ दो विशेष सम्बन्धियों को इस बात का निर्देश देती हैं कि वे एक-दूसरे से प्रत्यक्ष अन्तक्रिया

न करें एक-दूसरे से दूर रहें। जहाँ तक सम्भव हो एक दूसरे का नाम न लें अथवा उनसे बातचीत भी नहीं करें।

लोवी का कथन है कि श्वसुर और पुत्र वधु तथा सास और दामाद के पारस्परिक सम्बन्ध परिहार के मुख्य उदाहरण हैं। इन्होंने युकाग्हिर जनजाति में परिहार का उल्लेख करते हुए बताया है कि इस जनजाति में बहू कभी भी अपने श्वसुर अथवा जेठ के चेहरे को नहीं देखती और न ही दामाद अपनी सास अथवा श्वसुर के चेहरे को देख सकता है। उन्हें यदि एक-दूसरे से बातचीत करनी होती है तो वे पहले ही पर्दा कर लेते हैं। अनेक अन्य उदाहरणों के द्वारा भी जनजातियों में परिहार सम्बन्धी रीति को समझा जा सकता है।

जैसे ऑस्ट्रायक जनजाति में बहू अपने श्वसुर के सामने और दामाद अपनी सास के सामने तब तक नहीं आते जब तक कि वे किसी सन्तान को जन्म न दे दें। बहू के लिए यह परिहार आवश्यक है कि वह सदैव घूंघट निकालकर अपनी सास से बात करें।

इस सम्बन्ध में मुख्य प्रश्न यह उठता है कि विभिन्न नातेदारों के बीच परिहार सम्बन्धी रीतियाँ किस कारण विकसित हुईं। विद्वानों ने परिहार सम्बन्धी कारणों को अनेक आधारों पर स्पष्ट किया है जिनमें से कुछ प्रमुख विचारों को समझकर एक सम्भावित निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है।

(1) फ्रेजर का विचार है कि परिहार सम्बन्धी रीतियों का उद्देश्य निकट सम्बन्धियों के बीच यौन-सम्बन्धों की सम्भावना को समाप्त करना है। इसी कारण श्वसुर-बहू, सास-दामाद तथा भाई-बहिन के बीच परिहार सम्बन्धी रीतियों का विकास हुआ। सास-बहू तथा श्वसुर और दामाद के बीच स्पष्ट होने वाले परिहार वास्तव में पहली स्थिति के फलस्वरूप ही विकसित हुए।

MARCH APRIL MAY
2017

(2) लोवी का विचार है कि परिहार सम्बन्धी रीतियों को दो भिन्न परिवारों की सांस्कृतिक भिन्नता के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। एक दामाद अथवा पुत्र-वधू जिस परिवार से नए घर में आते हैं, वहाँ शिष्टाचार सम्बन्धी विशेषताएँ और नैतिक मूल्य श्वसुर के घर से भिन्न हो सकते हैं। इस दशा में बहू और दामाद को सास-श्वसुर से इसीलिए पृथक रखा जाता है जिससे उनके बीच कोई सांस्कृतिक तनाव उत्पन्न न हो।

(3) रैडक्लिफ ब्राउन के अनुसार नातेदारी व्यवस्था में अनेक व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके बीच घनिष्ठ सम्बन्ध व्याप्त होने से परिवार के अनेक दूसरे सदस्यों में द्वेष और ईर्ष्या की भावना पनप सकती है। इस कारण ऐसे सम्बन्धियों को एक-दूसरे से दूर रखने का प्रयत्न किया जाता है।

(4) टायलर का विचार है कि परिहार सम्बन्धी रीतियों का कारण आरम्भिक मातृसत्तात्मक परिवार-व्यवस्था में ढूंढा जा सकता है। मातृसत्तात्मक परिवारों में दामाद को एक अपरिचित और बाहर का व्यक्ति समझा जाता था। इसी कारण दामाद और सास के बीच परिहार का प्रचलन हो गया। बाद में इसी रीति के प्रभाव से पितृसत्तात्मक परिवारों में भी श्वसुर और बहू के बीच परिहार विकसित हो गये।

(5) अनेक मानवशास्त्री यह मानते हैं कि परिहार सम्बन्धी रीतियों का उद्देश्य दो नातेदारों में एक के द्वारा दूसरे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना ही है। वास्तव में विभिन्न समाजों में परिहार सम्बन्धी रीतियों के कारण भिन्न-भिन्न रहे हैं, अतः इन्हें किसी एक कारण के आधार पर स्पष्ट नहीं किया जा सकता। ऐसे सभी परिहारों का उद्देश्य विभिन्न नातेदारों के बीच सम्मानपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखना, सदस्यों को नयी परिस्थितियों से अनुकूलन के अवसर प्रदान करना तथा परिवार की व्यवस्था को शान्तिपूर्ण बनाये रखना है।